

## जलवायु परिवर्तन से उभयचरों को खतरा

### प्रलिस के लिये:

जलवायु परिवर्तन से खतरे में पड़े उभयचर, उभयचर, [जलवायु परिवर्तन, अंतरराष्ट्रीय प्रकृतिसंरक्षण संघ \(IUCN\)](#)।

### मेन्स के लिये:

जलवायु परिवर्तन से खतरे में पड़े उभयचर, संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण, पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन।

[स्रोत: द हट्टि](#)

## चर्चा में क्यों?

नेचर जर्नल में प्रकाशित 'ऑनगोइंग डकिलाइंस फॉर द वर्ल्ड्स एम्फीबियंस इन द फेस ऑफ इमर्जिंग थ्रेट्स' (Ongoing declines for the world's amphibians in the face of emerging threats) शीर्षक वाले अध्ययन से विश्व भर के उभयचरों के लिये विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन से प्रमुख खतरों का पता चला है।

- यह अध्ययन एम्फीबियन रेड लिस्ट अथॉरिटी द्वारा समन्वित द्वितीय वैश्विक उभयचर मूल्यांकन पर आधारित है, जो अंतरराष्ट्रीय प्रकृतिसंरक्षण संघ (IUCN) प्रजाति उत्तरजीवित्ता आयोग (Species Survival Commission) के उभयचर विशेषज्ञ समूह की एक शाखा है।
- इस मूल्यांकन में विश्व भर से **8,000 से अधिक उभयचर प्रजातियों के विलुप्त होने के जोखिम** का मूल्यांकन किया गया, जसिमें 2,286 प्रजातियों का मूल्यांकन प्रथम बार किया गया।

## अध्ययन के प्रमुख बडि:

- **विलुप्त होने का जोखिम:**
  - विश्व में प्रत्येक पाँच उभयचर प्रजातियों में से दो प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा है।
  - विश्व स्तर पर लगभग 40.7% प्रजातियाँ खतरे में हैं जो किसी भी प्रकार की प्रजाति के लिये सबसे बड़ा प्रतशित है। इसके वपिरित 12.9% पक्षियों, 21.4% सरीसृपों और **26.5% स्तनधारियों** को भी इसका खतरा है।
  - वर्ष 2004 और 2022 के बीच 300 से अधिक उभयचर प्रजातियाँ **विलुप्त होने की कगार पर हैं**, इनमें से 39% प्रजातियों के लिये जलवायु परिवर्तन को प्राथमिक खतरे के रूप में देखा जाता है।
    - उभयचर पर्यावरणीय परिवर्तनों के प्रत विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं, जसिसे वे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रत संवेदनशील हो जाते हैं।
- **विलुप्त उभयचर:**
  - वर्ष 2004 के बाद से चार उभयचर प्रजातियों को विलुप्त प्रजातियों के रूप में उल्लेखित किया गया था, जसिमें कोस्टा रिका (देश) की चरिकि हार्लेक्वनि मेंढक (**एटलोपस चरिकिनिससि**), ऑस्ट्रेलिया की शारप स्नाउट डे फ्रॉग (**टॉडैकटाइलस एक्यूटुरिस**) और ग्वाटेमाला की कराउगैस्टोर माइलोमल्लिन एवं जालपा फाल्स बुरुक सैलामैंडर (**स्यूडोयूरीसिया एकस्पेक्टाटा**) प्रजातियाँ शामिल हैं।
- **संकटग्रस्त उभयचरों का सबसे बडी संकरेंदरण:**
  - संकटग्रस्त उभयचरों का सबसे व्यापक संकरेंदरण कैरेबियाई द्वीपों, **मैक्सिको और मध्य अमेरिका, उष्णकटबंधीय एंडीज़ क्षेत्र, भारत के पश्चिमी घाट, श्रीलंका, कैमरून, नाइजीरिया और मेडागास्कर** में पाया गया।
- **मानवीय प्रभाव:**
  - कृषि, बुनियादी ढाँचे के विकास और अन्य उद्योगों जैसी गतविधियों के कारण आवास का वनिश तथा क्षरण उभयचरों के लिये प्रमुख संकट बना हुआ है, जो सभी संकटग्रस्त प्रजातियों में से **93% प्रभावित कर रहा है**।
- **रोग और अत्यधिक शोषण:**
  - **चट्टिडि कवक** के कारण होने वाली बीमारी और अत्यधिक दोहन उभयचरों की कमी में योगदान दे रहा है।
  - वर्ष **1980 और 2004** के बीच बीमारी और नवास स्थान के नुकसान के कारण **स्थिति में 91% गरिावट आई**।
  - अविरत और अनुमानित जलवायु परिवर्तन के प्रभाव अब बढ़ती चति का कारण बन रहे हैं, वर्ष 2004 के बाद से **39% स्थिति में गरिावट**

आई है, इसके बाद नविस स्थान का नुकसान हुआ है।

■ **सैलामैंडर संकट:**

- सैलामैंडर की हर पाँच में से तीन प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर हैं, जिसका मुख्य कारण आवास वखिंडन और जलवायु परिवर्तन है।
- सैलामैंडर को वशिव के उभयचरों के सबसे संकटग्रस्त समूह के रूप में पहचाना जाता है।
  - उभयचर को पहली बार 300 मिलियन वर्ष से भी पहले पहचाना गया था। उभयचरों के तीन वर्ग आज भी मौजूद हैं:
    - सैलामैंडर और न्यूट्स (60% विलुप्त होने का खतरा), मेंढक व टोड (39%), तथा अंगहीन एवं सर्पीन सीसलियन (16%)।

■ **संरक्षण कार्रवाई:**

- संरक्षणवादियों ने वैश्विक संरक्षण कार्य योजना विकसित करने, संरक्षण के प्रयासों को प्राथमिकता देने, अतिरिक्त संसाधनों को सुरक्षित करने और उभयचरों के प्रतिनकारात्मक प्रवृत्त में बदलाव लाने के लिये नीतियों को प्रभावित वाले अध्ययन के नषिकर्षों का उपयोग करने की योजना बनाई है।

## उभयचर:

■ **परचिय:**

- वे एनमिलिया जीव जगत के कॉर्डेटा संघ के अंतर्गत आते हैं, उदाहरण के लिये, मेंढक, टोड, सैलामैंडर, न्यूट्स, सीसलियन आदि।
- ये बहुकोशिकीय कशेरुक हैं जो स्थल और जल दोनों पर नविस करते हैं।
- ये भूमिपर वचिरण करने वाले पहले समतापी जीव हैं।
  - समतापी जीवों को उन जीवों के रूप में परभाषित किया जाता है जो पर्यावरण में परिवर्तन के साथ अपने आंतरिक शरीर के तापमान को नियंत्रित नहीं कर सकते हैं।
- ये फुफ्फुस और त्वचा के माध्यम से श्वसन क्रिया करते हैं।
- उनके हृदय तीन प्रकोष्ठ के बने होते हैं।

■ **महत्त्व:**

- पारस्थितिकि दृष्टिकोण से उभयचरों को महत्त्वपूर्ण पारस्थितिकि संकेतक माना जाता है। उच्च स्तर की संवेदनशीलता के कारण उनका अध्ययन किया जाता है, जिससे उनके नविस स्थान के वखिंडन, पारस्थितिकि तंत्र के तनाव, कीटनाशकों के प्रभाव और वभिन्न मानवजनित गतिविधियों का संकेत मलित है।
  - ये महत्त्वपूर्ण जैविक संकेतक हैं और पारस्थितिकि तंत्र के व्यापक स्वास्थ्य के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।
- ये उपभोक्ता (शिकारी) और उत्पादक (शिकार) दोनों के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उभयचर कीट खाते हैं, जो कृषि के लिये फायदेमंद है और मलेरिया जैसी बीमारियों को नियंत्रित करने में भी सहायता करते हैं।
- उभयचर प्राणी चिकित्सीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। उभयचरों की त्वचा में वभिन्न प्रकार के पेप्टाइड्स होते हैं और ये कई मानव रोगों के लिये चिकित्सा उपचार की संभावना प्रदान करते हैं।
  - वर्तमान समय में इनका उपयोग कुछ दर्द निवारक के रूप में भी किया जाता है।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

**??????????:**

प्रश्न. भारत की जैवविधिता के संदर्भ में सीलोन फ्रॉगमाउथ, कॉपरसमथि बारबेट, ग्रे-चनिड मनिविट और ह्वाइट-थ्रोटेड रेडसटार्ट क्या है? (2020)

- (a) पक्षी
- (b) प्राइमेट
- (c) सरीसृप
- (d) उभयचर

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- ये सभी एवयिन पारस्थितिकि तंत्र का हसिसा हैं।
- **सीलोन फ्रॉगमाउथ:**
  - यह एक भूरे-भूरे रंग की रात्रचिर पक्षी प्रजाति है जो पश्चिमी घाट और श्रीलंका के जंगली आवासों में पाई जाती है।
- **कॉपरसमथि बारबेट:**
  - इसे करमिसन-बरेसटेड बारबेट और कॉपरसमथि भी कहा जाता है, यह एक एशियाई बारबेट है जिसका ललाट और गला गहरे लाल रंग का होता है, इसकी आवाज़ ठीक उसी प्रकार होती है जैसी किसी लोहार द्वारा हथौड़े से धातु पर प्रहार करने से निकलती है।
  - यह भारतीय उपमहाद्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ हसिसों में पाया जाता है।
- **वाइट थ्रोटेड रेडसटार्ट:**

○ यह मस्ककिपडि समूह में पक्षी की एक प्रजाति है। यह भूटान, चीन, भारत, म्याँमार और नेपाल में पाई जाती है।

■ **ग्रे-चनिड मनीवेट:**

○ यह कैम्पेफैगडि समूह में पक्षी की एक प्रजाति है।

○ यह बांग्लादेश, भूटान, कंबोडिया, चीन, भारत, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्याँमार, नेपाल, ताइवान, थाईलैंड और वयितनाम में पाई जाती है।

○ इसका प्राकृतिक आवास उपोष्णकटबिंधीय या उष्णकटबिंधीय नम तराई वाले वन हैं।

**अतः विकल्प (a) सही उत्तर है।**

**प्रश्न. सजीवों के विकास के संदर्भ में, नमिनलखिति में से कौन-सा क्रम सही है? (2009)**

(a) ऑक्टोपस - डॉल्फनि - शार्क

(b) पैंगोलनि - कछुआ - बाज़

(c) सैलामैंडर - पायथन - कंगारू

(d) मेंढक - केकड़ा - झींगा

**उत्तर: (c)**

■ विकासवादी चरणों का क्रम: एककोशकीय → बहुकोशकीय → मछलियाँ → उभयचर → सरीसृप → पक्षी → स्तनधारी।

○ ऑक्टोपस (मोलस्क); डॉल्फनि और व्हेल (स्तनधारी); शार्क (मछली)

○ पैंगोलनि (स्तनपायी); कछुआ (सरीसृप); बाज़ (पक्षी)

○ **सैलामैंडर (उभयचर) - अजगर (सरीसृप) - कंगारू (स्तनपायी)। यह क्रम विकासवादी चरणों के सही अनुक्रम के अनुरूप है।**

○ मेंढक (उभयचर); केकड़ा (क्रस्टेशियंस); झींगा (क्रस्टेशियंस)

■ **अतः विकल्प (c) सही उत्तर है।**

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/amphibians-threatened-by-climate-change>

